वर्ष :: 34 अंक : 09
पृष्ठ : 08 :: मूल्य 2 रुपए मात्र

मिथिला
वर्णन
स्वच्छ पत्रकारिता, स्वस्थ पत्रकारिता
झारखंड-बिहार का लोकप्रिय हिन्दी साप्ताहिक

/mithilavarnan

बोकारो :: रविवार, 26 नवंबर, 2023 News & E-paper : www.varnanlive.com E-mail : mithilavarnan@gmail.com

पूरे परिवार के लिये आध्यात्मिक पत्रिका

अवश्य पढ़ें-
निखिल-मंत्र-विज्ञान
14ए, मेनरोड, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)
फोन : (0291) 2624081, 263809

बांग्लादेशी घुसपैठियों का गढ़ बना झारखंड

हाईकोर्ट सख्त, केन्द्रीय गृह मंत्रालय से दो हफ्ते के भीतर मांगा जवाब

- विजय कुमार झा -

रांची : झारखंड में बांग्लादेशी घुसपैठ पर हाईकोर्ट की चिन्ता ने कई अहम सवाल खड़े कर दिए हैं। झारखंड हाईकोर्ट ने राज्य के संथाल परगना में बांग्लादेशी घुसपैठ पर केंद्रीय गृह मंत्रालय से जवाब तलब किया है। हाईकोर्ट ने केंद्रीय गृह मंत्रालय से पूछा है कि केंद्र और राज्य सरकार के अफसरों की संयुक्त टीम बनाकर झारखंड के संथाल परगना इलाके में अवैध प्रवासियों (बांग्लादेशी घुसपैठियों) का पता लगाना संभव है या नहीं? कोर्ट ने इस मामले में दो सप्ताह में जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया है।

दरअसल, संथाल परगना में बांग्लादेशी घुसपैठियों के कारण वहां की डेमोग्राफी (जनसांख्यिकी) पर पड़ रहे प्रतिकूल प्रभाव के मुद्दे पर डेनियल दानिश द्वारा दायर जनहित याचिका की सुनवाई करते हुए झारखंड हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश संजय कुमार मिश्र की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने पिछले बुधवार को यह निर्देश दिया। कोर्ट ने केंद्र सरकार के अधिवक्ता प्रशांत पल्लव से कहा कि वह सरकार से निर्देश लेकर बताएं कि साहिबगंज, पाकुड़, दुमका, गोड्डा व जामताड़ा आदि क्षेत्र में अवैध प्रवासियों का पता लगाना संभव है या नहीं? उल्लेखनीय है कि लगभग चार माह पूर्व झारखंड हाईकोर्ट ने गृह मंत्रालय से पूछा था **(शेष पेज- 7 पर)**

1994 में हुई थी 17 हजार बांग्लादेशियों की पहचान

बांग्लादेश की सीमा के पास स्थित झारखंड के 5 जिलों की डेमोग्राफी तेजी से बदली है। पिछले 3 दशकों में बांग्लादेश से लाखों की संख्या में घुसपैठिये साहिबगंज, पाकुड़, दुमका, गोड्डा और जामताड़ा जिलों के अलग-अलग इलाकों में आकर बस गये हैं। इन इलाकों में हो रहे जन-सांख्यिकीय बदलाव को लेकर सरकारी विभागों ने केंद्र और राज्य सरकारों को समय-समय पर कई बार रिपोर्ट प्रेषित की है। केंद्रीय गृह मंत्रालय के आदेश पर 1994 में साहिबगंज जिले में 17 हजार से अधिक बांग्लादेशियों की पहचान हुई थी। इन बांग्लादेशियों के नाम मतदाता सूची से हटाए गए थे, लेकिन इन घुसपैठियों को वापस नहीं भेजा जा सका।

हाईकोर्ट के आदेश से ठोस कार्रवाई की उम्मीद : ओझा

पिछले दिनों विधानसभा के बजट सत्र के दौरान कार्य स्थगन सूचना के जरिए संथाल परगना के जिलों में बांग्लादेशी घुसपैठ का मामला उठाने वाले राजमहल के भाजपा विधायक अनंत ओझा ने झारखंड हाईकोर्ट के आदेश को स्वागत योग्य बताया है। 'मिथिला वर्णन' से खास बातचीत करते हुए श्री ओझा ने कहा- 'माननीय उच्च न्यायालय द्वारा इस मामले में किये गये कार्य का हम हृदय से अभिवादन करते हैं। जब राज्य सत्ता या शासन तंत्र में बैठे हुए लोग लगातार इसकी अनदेखी करेंगे तो वैसी स्थिति में माननीय न्यायालय ने इस प्रकार का निर्देश दिया है, यह एक स्वागत योग्य कदम है। दूसरा विषय है कि आखिर साहिबगंज जिला के कुछ प्रखंड, पाकुड़ जिला के कुछ सीमावर्ती प्रखंडों की जनसंख्या का अनुपात 200 से 300 प्रतिशत बढ़ा कैसे? खास एक वर्ग के कारण ही वृद्धि हुई है। अन्य क्षेत्रों में पंचायत का विस्तार नहीं हुआ, लेकिन किसी खास क्षेत्र में पंचायतों का विस्तार क्यों हुआ? ऐसी बहुत सारी बातें हैं, जिन्हें अगर सरकार संवेदनशीलता दिखाती तो इसे रोका जा सकता था। लेकिन, चूंकि वोटबैंक की राजनीति से प्रभावित है, इसलिए लगातार ऐसी अनदेखी हो रही है।'

श्री ओझा ने कहा कि, कैसे राजमहल के लोगों का नागरिक वैध प्रमाण-पत्र दुमका जिले के अन्दर पकड़ाया था। इसे लेकर जब मैंने विधानसभा में सवाल किया तो सरकार ने कहा कि सीआईडी जांच हो रही है। दो साल से ज्यादा हो गया, आजतक सीआईडी जांच की रिपोर्ट सामने नहीं आई। उन्होंने कहा -'जिस तरह आज माननीय न्यायालय ने कार्रवाई के लिए निर्देश दिया है, 1994 में हमलोगों ने जब आंदोलन किया तो भारत सरकार के गृह सचिव के आदेश पर जांच हुई थी और 17 हजार 54 बांग्लादेशी घुसपैठियों को चिन्हित कर मतदाता सूची से उनके नाम हटाये गये थे। लेकिन, उनलोगों को वापस बांग्लादेश नहीं भेजा गया। आखिर वे लोग हैं कहां, जिनका नाम वोटर लिस्ट से काटा गया? ऐसे बहुत सारे विषय हैं पाकुड़, साहिबगंज, दुमका आदि जिलों में। इसके अलावा भी झारखंड के कई हिस्से होंगे, जो इससे प्रभावित हैं। इसलिए मुझे विश्वास है कि **(शेष पेज- 7 पर)**

राज्यपाल ने भी बताया था खतरनाक

दरअसल, आम लोग भी यह मानते हैं कि झारखंड का संथाल परगना इलाका बांग्लादेशी घुसपैठियों का सुरक्षित पनाहगार बन गया है। पहले झारखंड हाईकोर्ट ने राज्य और केंद्र सरकार से पूछा था कि बांग्लादेशी घुसपैठिए झारखंड में कैसे प्रवेश कर रहे हैं? क्या केंद्र सरकार को इसकी जानकारी है? उसके बाद राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन ने भी गहरी चिंता जताते हुए संथाल परगना में बांग्लादेशी घुसपैठ को बहुत ही खतरनाक बताया था। उनका कहना था कि विदेशियों की घुसपैठ से आदिवासी समुदाय की जीवनशैली बदल जाने का खतरा पैदा हो गया है। जबकि, भाजपा के लोग बांग्लादेशी घुसपैठ का मुद्दा अक्सर उठाते रहे हैं। जानकारों के अनुसार बांग्लादेशी घुसपैठिये आदिवासी लड़कियों से लव जिहाद के अपने मंसूबे के तहत शादी करते हैं, आदिवासी जमीन खरीदते हैं और उनका धर्म परिवर्तन करवाकर संथाल परगना की डेमोग्राफी (जन-सांख्यिकी) में बदलाव कर रहे हैं। इतनी ही नहीं, सुरक्षित सीटों पर ये घुसपैठिये अपनी आदिवासी पत्नी को चुनाव में खड़ा भी करवाते हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार पिछले कुछ वर्षों में संथाल परगना के साहिबगंज, जामताड़ा, पाकुड़, गोड्डा, दुमका आदि जिलों में मदरसों की संख्या में अचानक भारी बढ़ोत्तरी हुई है। सीमा से सटे जिलों में बांग्लादेशी घुसपैठिये आते हैं, इन मदरसों में ठहरते हैं और वहीं उनका दस्तावेज तैयार होता है।

फिर जगी उम्मीद झारखंड के स्वास्थ्य सचिव सह विकास आयुक्त ने विधायक बिरंची नारायण को किया आश्वस्त

ढ़ाई महीने में होगा बोकारो में मेडिकल कॉलेज का शिलान्यास

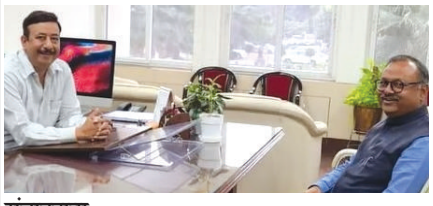

संवाददाता

बोकारो : बोकारो में मेडिकल की पढ़ाई के लिए कॉलेज की चिर-प्रतीक्षित मांग पूरी होने की दिशा में सकारात्मक संकेत एक बार फिर दिख रहे हैं। झारखंड सरकार के स्वास्थ्य सचिव सह विकास आयुक्त अरुण कुमार सिंह के अनुसार आगामी दो से ढ़ाई महीने के भीतर इसका शिलान्यास कर दिया जाएगा। झारखंड विधानसभा में विरोधी दल के मुख्य सचेतक सह- बोकारो विधायक बिरंची नारायण को इस संबंध में आश्वस्त किया है। बोकारो में मेडिकल कॉलेज के निर्माण की प्रगति की जानकारी लेने के उद्देश्य से श्री नारायण स्वास्थ्य सचिव से मिले थे। इस दौरान उन्होंने आश्वस्त किया कि दिसंबर के अंतिम सप्ताह में या जनवरी के प्रथम सप्ताह के समीप कॉलेज-निर्माण के लिए टेंडर निकल जाएगा। साथ ही, आगामी दो से ढाई महीने के अंदर इसका शिलान्यास भी हो जाएगा।

उल्लेखनीय है कि बोकारो में मेडिकल कॉलेज सेक्टर-12 में बनना प्रस्तावित है। इसके लिए बोकारो स्टील की ओर से 25 एकड़ भूमि भी स्वीकृत हो चुकी है। यहां मेडिकल कॉलेज खोलने के लिए पिछले 20 वर्षों से बोकारो में कवायद कई बार की गई, लेकिन वह सफल नहीं हो सकी। एक बार तो ऐसा लगा था कि जल्द ही बोकारो जनरल अस्पताल को मेडिकल कॉलेज का दर्जा मिल जाएगा, लेकिन वह भी ठंडे बस्ते में चला गया। ऐसे में देर से ही सही अगर बोकारो में मेडिकल कॉलेज खुलने की दिशा में कोई सार्थक पहल की जा रही है तो यह बोकारोवासियों के लिए बहुत बड़ी खुशी की बात होगी। मेडिकल कॉलेज खुलने के बाद यहां के लोगों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार भी मिलेगा। शहर का विकास तेजी से विकास होगा। मेडिकल की पढ़ाई के लिए हर साल यहां से करोड़ों रुपए का राजस्व दूसरे प्रदेशों में चला जाता है।

सेक्टर- 6 के रास्ते आसान होगी धनबाद की राह, बनेगी फोर लेन सड़क

बोकारो जिले में सड़क-निर्माण संबंधी बाधाएं भी जल्द दूर होंगी। बोकारो विधानसभा क्षेत्र की लगभग दो दर्जन से ज्यादा ग्रामीण सड़कों के निर्माण में तेजी आएगी। राज्य के ग्रामीण विकास सचिव अजय कुमार सिंह ने यह आश्वासन दिया है। विभागीय सचिव ने बोकारो विधायक को आश्वस्त किया है कि शीघ्र ही सारी सड़कों का टेंडर निकाला जाएगा। इसके अलावा पथ निर्माण विभाग के सचिव से मिलकर सेक्टर-6 टीवी टावर चौक से लेकर तेलमोच्चो ब्रिज तक की सड़क को फोर लेन करने संबंधी बात पीडब्ल्यूडी सचिव सुनील कुमार सिंह से की। विभागीय सचिव से सकारात्मक वार्ता हुई। ज्ञात हो कि पूर्व में बीएसएल द्वारा इस पथ के निर्माण संबंधी स्वीकृति दी गई है। शीघ्र ही इसकी भी निविदा निकाली जाएगी।

– संपादकीय –

योगी सरकार का बड़ा संदेश

उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने 'हलाल' सर्टिफिकेट वाले खाद्य उत्पादों पर प्रतिबंध लगा दिया है। उत्तर प्रदेश में खाद्य, औषधि और प्रसाधन सामग्री पर हलाल प्रमाणन के लेबल का उल्लेख करने वालों के खिलाफ अब कठोर कार्रवाई होगी। सच कहें तो योगी सरकार ने हलाल सर्टिफिकेशन के नाम पर धंधा चलाने वाली कंपनियों के देशद्रोही इरादों पर शिकंजा कसते हुए पूरे देश को एक बड़ा संदेश दिया है। योगी सरकार के इस फैसले का देश के 80 प्रतिशत लोगों ने स्वागत किया है। दरअसल, भारत का बहुसंख्यक हिन्दू समाज लम्बे समय से यह मांग कर रहा है कि जब देश में मुसलमानों की संख्या सिर्फ 15 प्रतिशत है तो बाकी की 85 फीसदी जनसंख्या को आखिर 'हलाल' के नाम पर सामान खरीदने के लिए क्यों मजबूर किया जा रहा है? यहां मांसाहार में 'हलाल' का होना उनकी मजहबी मान्यताओं के अनुसार समझ में आता है, किंतु किसी भी कंपनी, संस्था या छोटे दुकानदार, वस्तु निर्माता को इसके लिए मजबूर नहीं किया जा सकता कि यदि उसने 'हलाल' सर्टिफिकेट नहीं लिया है तो उसके सामान को बाजार के चलन में नहीं आने दिया जाएगा। वास्तव में 'हलाल' प्रमाणपत्र के नाम पर ऐसा करने वालों ने उन तमाम नियमों को भी एक झटके में ताक में रख दिया, जो भारत सरकार एवं राज्य सरकारों ने फूड प्रोसेसिंग, नागरिक खाद्य सुरक्षा के लिए अनिवार्य किए हैं। इसलिए ही आज इस गोरख धंधे को तुरन्त बंद कर देने की अवाज उठाई जा रही है। दरअसल, उत्तर प्रदेश सरकार ने हलाल इंडिया प्राइवेट लिमिटेड चेन्नई, जमीयत उलमा हिन्द हलाल ट्रस्ट दिल्ली, हलाल काउंसिल ऑफ इंडिया मुंबई, जमीयत उलमा महाराष्ट्र मुम्बई के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की है। प्राथमिकी के हवाले से कहा गया कि ये कंपनियां और संगठन न केवल वित्तीय लाभ के लिए, बल्कि सामाजिक वैमनस्यता बढ़ाते हुए फर्जी प्रमाण पत्र तैयार कर रहे हैं और हलाल प्रमाण पत्र जारी कर रहे हैं। यूपी में कुछ कंपनियां हलाल सर्टिफिकेशन के नाम पर धंधा चला रही थीं। ये कंपनियां डेयरी, कपड़ा, चीनी, नमकीन, मसाले और साबुन इत्यादि उत्पादों को भी हलाल सर्टिफाइड करके बेच रही थीं। यह मामला जब मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के संज्ञान में आया तो इस पर कार्रवाई की गई है। योगी सरकार ने ऐसे सभी उत्पादों की बिक्री पर रोक लगा दी है। आरोप है कि 'हलाल' सर्टिफिकेशन से होने वाली कमाई से आतंकी संगठनों और राष्ट्र विरोधी गतिविधियों को फंडिंग की जा रही है। जानकारों के अनुसार यह पूरा खेल हर कंपनी में 'हलाल' सर्टिफिकेट की आड़ में जबरन एक खास समुदाय को रोजगार दिलाने और एक अवैध समानान्तर अर्थव्यवस्था खड़ी कर लेने का है, जिससे आतंकवाद को पोषित करने का संदेह भी सामने आता रहा है। यह बेवजह भी नहीं है, क्योंकि इसके पीछे भी ठोस प्रमाण मौजूद हैं। मुंबई में हुए 26/11 के हमले के लिए अमेरिका के 'हलाल' प्रमाणित एक बूचड़खाने से पैसे इकट्ठा किए गए थे। इसका खुलासा तब हुआ, जब इस आतंकी हमले की जांच के दौरान लश्कर-ए-तैयबा के दो आतंकयों डेविड हेडली (दाऊद गिलानी) और तहव्वुर राणा को गिरफ्तार किया गया था। इन परिस्थितियों में योगी सरकार ने 'हलाल' सर्टिफिकेट वाले खाद्य उत्पादों पर प्रतिबंध लगाकर निश्चय ही सराहनीय कदम उठाया है। देश की अन्य राज्य सरकारों को भी चाहिए कि वे ऐसे कदम उठाए, ताकि देश में समानान्तर अर्थ-व्यवस्था खड़ी कर राष्ट्र-विरोधी गतिविधियों को बढ़ावा देने वाली ताकतों के मंसूबों पर पानी फेरा जा सके।

आप अपने विचार अथवा अपनी रचनाएं हमें निम्नलिखित ई–मेल पर भेज सकते हैं–
mithilavarnan@gmail.com. Contact : 9431379234
Join us on /mithilavarnan
Visit us on : www.varnanlive.com
(किसी भी कानूनी विवाद का निबटारा केवल बोकारो कोर्ट में ही होगा।)

कितना सोशल है सोशल मीडिया

- अशोक पांडेय -

किसी भी चीज का आविष्कार समाज को और अधिक उन्नत बनाने के लिए किया जाता है। उन आविष्कारों के जरिए उम्मीद की जाती है कि इंसानी जिंदगी कुछ और समृद्ध होगी, काम करने में सहूलियत होगी और समाज का सामग्रिक विकास होगा। लेकिन उन आविष्कारों का जब अनैतिक प्रयोग शुरू होता है, जब आविष्कारों से छेड़खानी की जाती है तो विकास के सपने काफूर हो जाते हैं और सभ्य समाज में जीने का आदी इंसान मुंह छिपाने को मजबूर हो जाता है। ऐसे ही नवीनतम आविष्कारों में से एक है सोशल मीडिया। कई सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर आज धड़ल्ले से नंगा नाच हो रहा है। हर वर्ग के लोग उनमें शामिल हैं। पश्चिमी देशों के लोग भी भारतीय भाव-भंगिमा और फूहड़पन देखकर लजा जाएंगे-ऐसे ऐसे दृश्य परोसे जा रहे हैं। संयम, सहनशीलता या सादगी का संदेश देने वाला भारत आज सोशल मीडिया पर नंगा नाच कर रहा है। इंटरनेट की दुनिया ने सोशल मीडिया को और भी प्रचलित बना दिया है। जाहिर है कि इससे आदमी को जानकारी हासिल होती है, वह भी आनन-फानन में। किसी भी घटना की जानकारी के लिए अब अखबारों के दफ्तर या टीवी चैनलों को फोन नहीं किया जाता। यह सोशल मीडिया का ही करिश्मा है। हर खबर हमेशा आम लोगों की जेब तक पहुंचा दी जाती है, यह बात दीगर है कि उन खबरों की सच्चाई का पता लगाए बगैर ही समाज का एक वर्ग उबलने लगता है। स्थिति ऐसी हो जाती है कि सोशल मीडिया कितना सोशल और कितना अनसोशल है, यह सवाल सुलगता छूट जाता है।

एक तरह का प्रहसन

इस सोशल मीडिया के जरिए दिन भर जितने संदेश भेजे जाते हैं, अगर भारत के आंकड़ों को देखा जाए तो ज्यादातर संदेश जन्मदिन की बधाई, प्रेम निवेदन, उपदेशामृत प्रसारण अथवा किसी न किसी राजनीतिक सिद्धांत के समर्थन में ही होते हैं। स्वस्थ बौद्धिक चर्चा की जो जगह सोशल मीडिया पर होनी चाहिए थी, वह नहीं हो पाती। नतीजतन आज सोशल मीडिया भी एक तरह का प्रहसन बन कर रहा गया है। इस कोढ़ में खाज का काम किया है इसके आर्थिक लाभ से जुड़ने की घटना ने। जैसे ही लोगों को पता चला कि सोशल मीडिया पर अपनी भाव-भंगिमा पेश करने से देखने वालों की वाहवाही के अलावा पैसे भी कमाए जा सकते हैं, बस क्या था। पिल पड़े हैं लोग रील्स बनाने में।

शर्मिंदगी की हदें पार

फेसबुक, इंस्टाग्राम, एक्स अथवा ऐसे ही कई सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर आज धड़ल्ले से नंगा नाच हो रहा है। हर वर्ग के लोग उनमें शामिल हैं। पश्चिमी देशों के लोग भी भारतीय भाव-भंगिमा और फूहड़पन देखकर लजा जाएंगे-ऐसे ऐसे दृश्य परोसे जा रहे हैं। संयम, सहनशीलता या सादगी का संदेश देने वाला भारत आज सोशल मीडिया पर नंगा नाच कर रहा है। शर्मिंदगी की हदें पार कर चुकीं महिलाएं या पुरुष खुद को सोशल मीडिया पर कैसे परोसें कि उन्हें लाइक और शेयर किया जाए- रातदिन इसी की उन्हें चिंता सता रही है। बड़ा अजीब दौर है। लोगों ने आहिस्ता-आहिस्ता लाज के पर्दे से बाहर अधनंगा नाचना शुरू ही किया था कि डीपफेक भी शुरू हो गया है। समाज का ध्यान मौलिक बातों से अलग आभासी दुनिया की ओर ले जाने में जुटी सरकार को भी डीपफेक से डर लगने लगा है।

चिंता का विषय

समाज में परोसे जा रहे पोर्न पर रोक कैसे लगे, इसकी चिंता सताने लगी है। सोशल मीडिया को लोगों ने एंटी सोशल बनाने की कमर कस ली है। इस आविष्कार का प्रयोग समाज को जागरूक करने के लिए किया जाना था, उस पर लोग नंगे नाच रहे हैं। गंदगी जितनी हो फैलायी जा रही है क्योंकि इन सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों पर लाइक तो है, डिस्लाइक कम है। शेयर तो है, डिलीट या डिस्कार्ड कम है। नशे में चूर इन युवक-युवतियों का भविष्य क्या होगा- यह चिंता का विषय है। नंगा नाच करने वालों का यदि कोई आज हो भी, तो निश्चित तौर पर कल नहीं है। *(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।)*

रोग रूपी असुरों का दमन

-डॉ. सविता मिश्रा मागधी
बेंगलुरू, मो.- 8618093357

संस्मरण

- डॉ. सविता मिश्रा मागधी

देव दीपावली के दिन अपने घर बच्चों के साथ रहूंगी, मात्र इस कल्पना से ही मन बार-बार हिलोरें मारने लगा था सावी का। मन के हिलोरें मारने से क्या होता है, होता वही है जो "राम रचि राखा।"

रमैया मेमोरियल हॉस्पिटल, बेंगलुरु के बी.एम.टी. कक्ष में 26 दिनों से एडमिट सावी, मायलोमा की बीमारी से ग्रस्त हो बोनमैरो ट्रांसप्लांट के लिए भर्ती हुई थी।

बोनमैरो ट्रांसप्लांट की प्रक्रिया यानी कठोर तपस्या से गुजरना। रूम का तापमान हिमालय की कंदराओं से तनिक भी कम नहीं था। वह इसलिए कि कोई बैक्टीरिया न पनप पाए।

आज बहुत बेचैनी महसूस कर रही थी सावी। पहाड़ जैसे मोटे-मोटे आठ कंबलों में भी थरथरा रही थी वह। अचानक से उसके पूरे बदन में खुजलाहट बढ़ने लगी। मन भी बेलगाम हो नीरसता की ओर दौड़ लगाने लगा था। उसने सोचा, यह उसका आखिरी दिन है।

सीनियर डॉ.संतोष जी अपनी पूरी टीम के साथ राउंड पर आए। भद्र पुरुष होने के साथ उनमें अपने पेशेंट्स के लिए मृदु वाणी के साथ अपनत्व भी भरा था। उसका टेंपरेचर मापा गया। बुखार एक सौ दो, प्वाइंट्स दो निकला। बदन दर्द से वह टूट रही थी। ऐसे में डॉ.संतोष जी का सोमवार को रिलीव के स्थान पर बात बदलना आहत कर गया। बड़ी मुश्किल से सावी ने आंखों से गिरते दो बड़े-बड़े मोतियों को रोका।

आज सुबह ही तो जूनियर डॉ.जहीर और डॉ.आर्या के सामने वह चहक उठी थी। उन दोनों से उसने कहा भी था, 'बेटा, मैं फुल्ली ठीक हूं। अब तो बस घर जाना है। मेरे बच्चों ने कहा है, "मां, जिस दिन तुम मायलोमा कैंसर रूपी दानव को हराकर घर लौटोगी, उसी दिन अपनी दीपावली होगी।" सोमवार को देव दीपावली भी है। तो बेटा, मुझे क्या खाना है, क्या नहीं। बता देना, ताकि मैं एहतियात बरत सकूं।'

बीते समय को याद कर जब-तब उसकी आंखें गीली हो रहीं थी। असमय पति के निधन से, अंदर-अंदर वह बहुत टूटी, पर स्वयं को कभी बिखरने न दी। जिसकी जिंदगी चार पहिया की गाड़ी से एक पहिया पर सिमट जाए, उसके दारुण कष्ट की कोई व्याख्या नहीं। उसके दारुण कष्ट का सुफल अब मिला था। दोनों बेटे राम-लखन की तरह और बहू साक्षात सीता। अपने समय में सावी भी सीता थी। निस्वार्थ भाव से सास-ससुर की सेवा, उनके आखिरी क्षणों तक किया था उसने।

किस्से-कहानियों में या न्यूज सुना करती कि बेटे-बहू ने मां-बाप को वृद्धाश्रम भेज दिया या गांव में अकेला छोड़ दिया। जब तक बच्चे पढ़ाई कर रहे थे, वह इन सब बातों को सोच-सोच भयभीत रहा करती। अब हर्षित थी कि उसके गुदड़ी के लाल अनमोल रत्न निकले।

-'मैम, लंच आ गया। पहले लंच फिर दूसरा काम।' नर्स प्रियंका ने उसे यादों से जगाया। वैसे तो यहां की सभी नर्सें अच्छी हैं। सभी में अपनत्व है, पर अट्ठारह-उन्नीस वर्षीय प्रियंका और वर्षा की बात निराली थी। दोनों अपनी सगी मां की तरह उसका ध्यान रखती थीं। सावी ने मन को शांत किया। जैसे इतने दिन तप की, वैसे एक सप्ताह और। डॉक्टर देवदास हैं। नहीं-नहीं, देवदास नहीं, कृष्ण का रूप समाया रहता है उनमें, जिन्होंने बिना भेदभाव किए गांव वालों को बचाने के लिए पूरा गोवर्धन पर्वत उठा लिया था और महिला डॉक्टर दुर्गा रानी, जो रोग रूपी असुरों का दमन कर रही हैं।

(लेखिका वरिष्ठ साहित्यकार व समीक्षक हैं।)

समय रहते तय कर लें लक्ष्य और आत्मविश्वास के साथ उसे पाने का करें ईमानदार प्रयास : एसपी

डीपीएस बोकारो के द्विवार्षिक सदनोत्सव 'संगम' में विद्यार्थियों ने दिखाया कला-संस्कृति का अनूठा संगम

संवाददाता

बोकारो : 'समय से बड़ा मूल्यवान कुछ नहीं। जिसने समय का सम्मान किया है, समय ने उसे सब कुछ दिया है। विद्यार्थी समय रहते अगर अपने जीवन का लक्ष्य तय कर उसे पाने की दिशा में आत्मविश्वास व पूरी ईमानदारी के साथ अनवरत प्रयास करेंगे तो कोई भी बाधा उनकी सफलता के आड़े नहीं आ सकती। अपने लक्ष्य के प्रति जुनून जरूरी है। तभी समाज में आपकी एक अपनी पहचान बनेगी।' ये बातें बोकारो के पुलिस अधीक्षक (एसपी) प्रियदर्शी आलोक ने कही। शनिवार देर शाम डीपीएस बोकारो में गंगा, जमुना और रावी हाउस द्वारा आयोजित द्विवार्षिक सदनोत्सव 'संगम' को वह बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। सृष्टि और दृष्टि थीम पर आयोजित इस कार्यक्रम में बच्चों ने अपनी रंगारंग प्रस्तुतियों के जरिए देश की कलात्मक व सांस्कृतिक विविधता का अनूठा संगम प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि ने बच्चों की प्रस्तुतियों को सराहते हुए और उनके समग्र विकास की दिशा में डीपीएस बोकारो की ओर से किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। अपने विद्यार्थी-जीवन के अनुभव साझा करते हुए उन्होंने कहा कि शुरू से ही शिक्षा के साथ-साथ सह-शैक्षणिक मामलों में भी डीपीएस बोकारो की राष्ट्रीय ख्याति रही है। यह गरिमा ही इसकी अद्वितीय विरासत है। उन्होंने बच्चों के सर्वांगीण विकास में विद्यालय, शिक्षकों और अभिभावकों की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया।

अपने बच्चों का साथी बनें अभिभावक : डॉ. गंगवार

इसके पूर्व, विद्यालय के अश्वघोष कला क्षेत्र में आयोजित इस समारोह का उद्घाटन मुख्य अतिथि एसपी श्री आलोक एवं प्राचार्य डॉ. एएस गंगवार ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर किया। गंगा हाउस की वार्डन अत्रेयी भट्टाचार्य व पिया रानी सेन द्वारा स्वागत भाषण के बाद सीनियर विंग की छात्राओं ने स्वागत गीत पधारो म्हारे देश... एवं विद्यालय गीत आया है नया सवेरा... की सुमधुर प्रस्तुति दी। प्राचार्य डॉ. गंगवार ने विद्यालय की उपलब्धियों पर संक्षिप्त प्रकाश डालते हुए विद्यार्थियों के समग्र विकास के प्रति कटिबद्धता व्यक्त की। उन्होंने बच्चों के सर्वांगीण विकास में कला-संगीत की महत्ता पर प्रकाश डाला। विद्यार्थी-जीवन की सफलता के लिए उन्होंने सोशल मीडिया से दूरी बनाए रखने का संदेश दिया। साथ ही, अभिभावकों से अपने बच्चों के साथ समय बिताने व साथ बन उनका मार्गदर्शन करने की अपील भी की। इस क्रम में अतिथियों ने विद्यालय की त्रैमासिक पत्रिका जेनिथ के नए संस्करण का विमोचन भी किया। प्राचार्य ने एसपी को स्मृति-चिह्न भेंटकर सम्मानित किया।

सालभर की उपलब्धियों पर डाला प्रकाश :

इसी क्रम में जमुना हाउस की वार्डन पी. कलावती एवं नीतू सिंह ने गंगा, जमुना व रावी सदन के विद्यार्थियों की सालभर की उपलब्धियों पर विस्तार से प्रकाश डाला। धन्यवाद ज्ञापन रावी हाउस की वार्डन ई. शर्मिला एवं श्वेता शुभम ने किया। कार्यक्रम का सुरुचिपूर्ण संचालन छात्रा अदित्रि, देवोलीना, हिमांगी, ऋद्धिमा व छात्र आरुष राज ने किया। समापन राष्ट्रगान से हुआ। इस अवसर पर विभिन्न विद्यालयों के प्राचार्य, बड़ी संख्या में गंगा, जमुना व रावी सदनों के विद्यार्थियों के अभिभावकगण तथा शिक्षकवृंद उपस्थित रहे।

गीत-संगीत व नृत्य की मनभावन प्रस्तुतियों से बच्चों ने बिखेरी बहुरंगी छटा

सांस्कृतिक कार्यक्रम की शुरूआत सीनियर विंग के विद्यार्थियों ने आर्केस्ट्रा-प्रस्तुति से की। उन्होंने विभिन्न वाद्य-यंत्रों पर 70-80 के दशक की बॉलीवुड की सुपरहिट धुनों का सुंदर सम्मिश्रण सुनाकर भरपूर तालियां बटोरीं। इसके पश्चात गंगा हाउस के छोटे-छोटे विद्यार्थियों ने वर्षा आधारित नृत्य-प्रस्तुति से प्राकृतिक सौंदर्य को दर्शाया। मोर और चिड़िया का रूप धरे बच्चों की मासूमियत भरी अदाकारी, उनकी भाव-भंगिमाएं सहसा लोगों का मन मोह ले रही थीं। जमुना हाउस से सीनियर विंग के छात्र-छात्राओं ने समय के साथ संचार माध्यम में क्रमबद्ध बदलाव और सोशल मीडिया के दुष्परिणाम स्वरूप सामाजिक-पारिवारिक बिखराव को सुंदर ढंग से रेखांकित किया। वहीं, प्राइमरी विंग के बच्चों ने समूह-गान मैं तैयार हूं..., रावी सदन से प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों ने अग्नि की शक्ति तथा सीनियर विंग के छात्र-छात्राओं ने बाल मजदूरी की समस्या को दर्शाता मनोहारी नृत्य प्रस्तुत कर सबकी भरपूर सराहना बटोरी। उनकी प्रस्तुतियों से विद्यालय परिसर तालियों की गड़गड़ाहट से गुंजायमान हो उठा।

मुहिम हजारों लोग दे रहे आवेदन, मामलों का किया जा रहा ऑन द स्पॉट निष्पादन

अपनी योजनाएं ले सरकार पहुंच रही जनता के द्वार

संवाददाता

बोकारो : जिले भर में राज्य सरकार अपनी योजनाएं लेकर जनता के द्वार तेजी से पहुंच रही है। इसी क्रम में सरकार द्वारा संचालित आपकी योजना, आपकी सरकार, आपके द्वार कार्यक्रम का आयोजन शनिवार को जिले के सभी प्रखंडों की पंचायतों में किया गया। इस दौरान जिला स्तरीय पदाधिकारियों के अलावा संबंधित प्रखंडों के प्रखंड विकास पदाधिकारी व अंचलाधिकारियों की अगुवाई में ऑन स्पॉट दर्जनों मामलों का निष्पादन कर लोगों को सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं का लाभ दिया गया।

इसी कड़ी में चंदनकियारी प्रखंड की नयावन पंचायत में चास के अनुमंडल पदाधिकारी दिलीप प्रताप सिंह शेखावत शामिल हुए। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि कार्यक्रम का उद्देश्य प्रशासन व आम नागरिकों के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करना है। सरकार की लोक कल्याणकारी योजनाओं का लाभ सीधे जनता को दिलाना है। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम में आपकी समस्याओं का समाधान करने का ऑन द स्पॉट प्रयास किया जा रहा है। कुछ समस्याओं, जिनका निष्पादन ऑन द स्पॉट संभव नहीं है, उन्हें भी जल्द निष्पादित कर दिया जाएगा।

उधर,नावाडीह प्रखंड में आयोजित शिविर में मंत्री, उत्पाद एवं मद्य निषेध विभाग श्रीमती बेबी देवी एवं पेटरवार प्रखंड में आयोजित शिविर में गोमिया विधायक लंबोदर महतो शामिल हुए। उन्होंने लाभुकों के बीच परिसंपत्ति न स्वीकृति पत्र वितरित किए। कार्यक्रम का आयोजन चास प्रखंड के गोड़ावाली उ., गोड़ावाली दक्षिण, माराफारी पुनर्वास पंचायत, चंदनकियारी प्रखंड में नयावन पंचायत, बेरमो प्रखंड में गोविन्दपुर बी. पंचायत, नावाडीह प्रखंड में पोखरिया पंचायत, पेटरवार प्रखंड में पतकी पंचायत, चास नगर निगम के वार्ड संख्या 24 एवं 25 में भी यह कार्यक्रम आयोजित किये गए।

डीसी ने जागरूकता रथ को किया रवाना

समाहरणालय स्थित परिसर से उपायुक्त कुलदीप चौधरी ने हरी झंडी दिखाकर जागरूकता रथ को रवाना किया। उपायुक्त श्री चौधरी ने बताया कि जिला आपूर्ति शाखा द्वारा आमजनों के लिए विभिन्न कल्याणकारी योजनाएं संचालित होती हैं। उन्हीं योजनाओं से आमजनों को जागरूक करने के लिए इस रथ को आज रवाना किया गया। यह रथ जिले के सभी प्रखंडों की पंचायतों का भ्रमण कर लोगों को जागरूक करेगी।

प्रतीक बने झारखंड के पहले युवा एशियन फुटबॉल कनफेडरेशन कोच

कुमार संजय

बोकारो थर्मल : एशियन फुटबॉल कनफेडरेशन सहित ऑल इंडिया फुटबॉल फेडरेशन द्वारा आयोजित कोच की परीक्षा में बोकारो थर्मल, झारखंड के प्रतीक कुमार ने युवा कोच बनने में सफलता प्राप्त की है। प्रतीक बोकारो जिला के पहले एशियन फुटबॉल कनफेडरेशन से प्रमाणित फुटबॉल कोच बनने का गौरव प्राप्त किया है। पंजाब के मिनर्वा फुटबॉल एकेडमी द्वारा अक्टूबर में आयोजित 11 दिनों तक चले कठिन कोर्स में देश के विभिन्न राज्यों से आये 24 कोचों ने भाग लिया था।

कोर्स में देश के अलावा एशियन फुटबॉल के दिग्गज और सम्मानित कोच एडुकेटर्स जैसे सैयद अल्ताफ, सुरिन्दर सिंह ने सफलता पूर्वक कोर्स को संपन्न करवाया। प्रतीक कुमार ने पश्चिम बंगाल, दिल्ली, बेंगलुरु सहित अन्य राज्यों व विभिन्न क्लबों सहित नेशनल क्लब के खिलाड़ी भी रह चुके हैं। बोकारो थर्मल निवासी प्रतीक, डीवीसी के स्व कर्मचारी अशोक कुमार के पुत्र हैं और इनके पिता का देहांत जनवरी में हुआ था। सारी मुश्किलों के बाद भी प्रतीक ने अपने सपने और लक्ष्य को पूरा करके दिखाया है।

प्रतीक का कहना है कि वो झारखंड, बोकारो और बेरमो के लिये फुटबॉल के क्षेत्र में कुछ करने का सपना पाले हुए हैं। प्रतीक बेरमो मे प्रोफेशनल फुटबॉल एकेडमी खोलना चाहते हैं, जिसमें हर वर्ग के बच्चों को फुटबॉल की सम्पूर्ण शिक्षण व परीक्षण दे सकें।

बंद घर मतलब चोरों को बुलावा

संवाददाता
बोकारो : बोकारो में चोरों का आतंक थमने का नाम नहीं ले रहा। घर बंद कर कहीं भी किसी त्योहार में निकलना मतलब चोरों को खुला आमंत्रण देना है। शहर में एक बार फिर चोर बंद आवास का ताला तोड़ कर कीमती सामान चुरा ले गए। नगर के सेक्टर-4 थाना क्षेत्र में सेक्टर-4डी स्थित आवास संख्या में 6043 निवासी बीएसएल के पूर्व महाप्रबंधक अनिल कुमार कर्ण के घर से चोरों ने लगभग ढ़ाई लाख रुपए मूल्य की संपत्ति चुरा ली। श्री कर्ण छठ पूजा को लेकर अपने पैतृक गांव मधुबनी गए हुए थे। इसी दौरान चोरों ने घटना को अंजाम दे दिया।

चोरी की घटना का पता तब चला जब उनके आवास का माली बगीचे में फूलों में पटाने के लिए आया। माली ने मेन गेट का ताला टूटा पाया। भीतर जाने पर अंदर के ताले भी टूटे मिले। उन्होंने तुरंत इसकी सूचना घर के मालिक को दी, जिन्होंने स्थानीय पुलिस को सूचित किया। इसके बाद पुलिस ने मौके पर पहुंचकर जांच शुरू की। बताया जा रहा है कि लगभग 2.5 लाख से ऊपर के कीमती सामान की चोरी हुई है।

चोरों में पुलिस का कोई भय नहीं : अमित

भाजपा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य कुमार अमित ने बोकारो में अपराध की बढ़ती घटनाओं पर चिंता व्यक्त की है। कहा कि इन दिनों आपराधिक घटनाओं में काफी वृद्धि हुई है। इससे शहरवासी असुरक्षित महसूस कर रहे हैं। आए दिन बोकारो में चोरी, गोलीबारी, छिनतई जैसे आपराधिक घटनाएं आम बात हो गई हैं। राज्य के नेता प्रतिपक्ष अमर कुमार बाउरी के बोकारो, सेक्टर 1-सी आवास से उनके संबंधी की बाइक चोरों ने चुरा ली, जबकि सिटी थाना से घटना स्थल से दूरी एक किलोमीटर भी नहीं है। अब चोरों में पुलिस का कोई भय नहीं रहा। घरों में चोरी और सड़कों पर छिनतई तो आम बात हो गई है। कुमार अमित ने कहा कि अगर पुलिस अपराध नियंत्रण करने में विफल रही, तो बोकारो की जनता सड़क पर उतर कर पुलिस के खिलाफ आंदोलन करने को बाध्य होगी।

गंझूडीह के निवासियों को सौर ऊर्जा से मिलेगा पानी

संवाददाता
बोकारो : बोकारो स्टील प्लांट के सीएसआर के तहत गंजूडीह में सौर ऊर्जा चालित पेयजल मीनार का शुभारम्भ शनिवार को विधायक बिरंची नारायण द्वारा किया गया। इस अवसर पर बीएसएल के मुख्य महाप्रबंधक (नगर प्रशासन) कुंदन कुमार, महाप्रबंधक (सीएसआर) सीआर के सुधांशु तथा स्थानीय निवासी उपस्थित थे। तीन हजार लीटर क्षमता का यह सौर ऊर्जा चालित पेयजल मीनार गंजूडीह के निवासियों को शुद्ध पेयजल की सुविधा उपलब्ध कराएगी। उल्लेखनीय है कि बोकारो स्टील प्लांट के सीएसआर के तहत बोकारो के दलित एवं आदिवासी बहुल कुल 05 परिक्षेत्रीय गांवों में इस प्रकार का पेयजल मीनार स्थापित करने की योजना है, जिनमें गंजूडीह के अलावा बुधनाडीह, नरकरा, झिकलोपा एवं महुआर शामिल हैं।

कार्यक्रम डीवीसी चंद्रपुरा में संविधान दिवस के अवसर पर बाल संसद आयोजित

बच्चों के उज्ज्वल भविष्य से ही बन सकता है उज्ज्वल-भारत : एचओपी

संवाददाता
चंद्रपुरा : दामोदर घाटी निगम चंद्रपुरा ताप विद्युत केंद्र प्रबंधन और केंद्रीय विद्यालय द्वारा यहां के ऑफिसर्स क्लब में संविधान दिवस के अवसर पर बाल संसद का आयोजन किया गया। बाल संसद में शामिल स्कूली बच्चों ने सत्ता पक्ष और विपक्ष की भूमिका निभाई। बाल संसद में बच्चों ने विपक्ष की भूमिका में सत्ता पक्ष से कहा कि लोगों का आहार शुद्ध होगा, तभी समाज शुद्ध होगा। सत्ता पक्ष में बैठे सदस्यों ने रटी-रटाई जवाब में कहा कि सरकार इस मुद्दे पर सहजता से काम कर रही है। अगर सरकार सही काम नहीं करती तो लोग आज इतना खुशहाल नहीं होते। बाल संसद में डिनोवली विद्यालय, मिल्लत एंग्लो क्यूरेनिक रटारी विद्यालय, केंद्रीय विद्यालय, डीवीसी प्रथम मध्य विद्यालय, बिरसा सरस्वती शिशु विद्या मंदिर और डीवीसी जमा दो उच्च विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। बाल संसद में सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच ज्वलंत समस्याओं पर प्रहार और बचाव का सिलसिला काफी तेज चला।

इस अवसर पर अपने संबोधन में डीवीसी चंद्रपुरा के वरिष्ठ महाप्रबंधक सह- परियोजना प्रधान मनोज कुमार ठाकुर ने कहा कि बच्चों के उज्जवल भविष्य के कारण ही हमारा देश का भविष्य उज्जवल होगा। हमें बच्चों को यह बताना जरूरी है कि हम सभी विवाद में न पड़कर सकारात्मक कार्य में योगदान दें। देश को आर्थिक रूप से मजबूत करने के लिए नकारात्मक कार्य का तिरस्कार करना ही होगा। नकारात्मक कार्य करने वाले लोगों का बहिष्कार भी करना होगा। हमें स्वदेशी सामानों का उपयोग करना होगा, ताकि देश समृद्धशाली बन सके। उन्होंने कहा कि हमारे पूर्वज काफी मजबूत थे। इसका सबसे बड़ा कारण यही था कि हम स्वदेशी पर निर्भर थे। स्वदेशी के तहत पुरुषार्थ को बनाए रखना हम सबों की जिम्मेदारी है। न्यायाधीश की भूमिका में वरिष्ठ महाप्रबंधक रामप्रवेश शाह, उप महाप्रबंधक (प्रशासन) टी टी दास, प्रबंधक ए के चंद्रशेखर शामिल थे।

हफ्ते की हलचल

उदयाचल सूर्य को अर्घ्य के साथ महापर्व छठ संपन्न

बोकारो : ईश्वर के प्रति अगाध आस्था और समर्पण का चार दिवसीय महापर्व छठ अपने चिर-परिचित उत्साह और उमंग के साथ उदयाचल भगवान भास्कर को अर्घ्य के साथ संपन्न हो गया। बोकारो, उपशहर चास सहित आसपास के पूरे इलाके में यह महोत्सव धूमधाम के साथ मनाया गया। घर से लेकर घाट तक रौनक छाई रही। क्या बुजुर्ग और क्या बच्चा, हर उम्र के लोग पूरे नियम-निष्ठा के साथ आदिदेव भगवान सूर्य के प्रति श्रद्धानवत बने रहे। जिन व्रतियों ने अपने में घरों में छठ किया, उनके यहां भी आसपास के लोग भारी तादाद में जुट गए। किसी ने घर के पास बड़ा गड्ढा खोद उसमें प्लास्टिक डाल पानी भरकर, तो किसी ने घर की छत पर टंकी जैसी संरचना बनाकर उसमें भरे पानी में खड़े हो अर्घ्य प्रदान किया। वहीं, घाट का नजारा भी अद्भुत रहा। तिरंगा पार्क, सिटी पार्क छठ घाट, चास गरगा पुल छठ घाट, चास सोलागीडीह छठ घाट, दामोदर नदी तेलमोच्चो ब्रिज, सेक्टर-9 कूलिंग पौंड, सेक्टर-3 टू-टैंक गार्डेन, गरगा डैम, सेक्टर-12 में बारी को-ऑपरेटिव मोड़, माराफारी के रितुडीह, बांसगोड़ा, सिवनडीह में गरगा नदी पर बने घाटों पर श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ा रहा। छठ महापर्व के दौरान स्थानीय प्रशासन जन सेवा में मुस्तैद रहा। वहीं, विभिन्न सामाजिक संस्थाओं ने व्रतियों के लिए चाय, दूध, फल आदि के सेवा शिविर लगाए।

बोकारो स्टील में मनाया गया संविधान दिवस

बोकारो : 26 नवम्बर पूरे देश में संविधान दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसकी पूर्व संध्या पर बोकारो स्टील प्लांट के इस्पात भवन में स्थित समिति कक्ष में शनिवार को अधिशासी निदेशक (कार्मिक एवं प्रशासन) राजन प्रसाद ने बीएसएल अधिकारियों व कर्मियों को भारत के संविधान के उद्देशिका की शपथ दिलाई। इस कार्यक्रम में मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन विकास) मनीष जलोटा, मुख्य महाप्रबंधक (कार्मिक) हरि मोहन झा, मुख्य महाप्रबंधक (नगर प्रशासन) कुंदन कुमार तथा अन्य वरीय अधिकारी व कर्मी उपस्थित थे। इसके अलावा संविधान दिवस पर बीएसएल संचालित स्कूलों में भी कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता में बच्चों ने किया मोहित

बोकारो : तुपकाडीह के किड्स आइलैंड स्कूल में शनिवार को फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों ने विभिन्न रूप, जैसे- राजा-रानी, महात्मा गांधी, पुलिस, वकील, राक्षस आदि धारण कर वाहवाही बटोरी। स्कूल के निदेशक सर्वेश दुबे ने बताया कि इसके बाद विज्ञान और डांस प्रतियोगिता होगी।

जरीडीह बाजार में निःशुल्क नेत्र जांच शिविर आयोजित

बोकारो : जरीडीह बाजार स्थित गुजराती स्कूल में स्व गुणवती बेन कांति लाल मेहता की पुण्यतिथि के अवसर पर मुफ्त नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का शुभारंभ मुख्य अतिथि बेरमो प्रखंड प्रमुख गिरिजा देवी, अखिल भारतीय अग्रवाल कल्याण महासभा के प्रदेश अध्यक्ष सह- झामुमो नेता अनिल अग्रवाल, गिरीश कोठारी व सुबोध मेहता ने संयुक्त रूप से किया। कार्यक्रम में हाजी ए आर मेमोरियल आई अस्पताल के डॉक्टरों की टीम तथा मुख्य अतिथि व विशिष्ट अतिथि द्वारा स्व बेन की तस्वीर पर पुष्प अर्पित की गई। जबकि, जांच में भारी संख्या में महिला, पुरुष, वृद्ध अपनी मोतियाबिन्द जांच करवाने के लिए रजिस्ट्रेशन करवाते नजर आये। शिविर में डॉक्टरों की टीम में डॉ आरोफिल शेख, डॉ मेहराब आलम तथा सहायक के रूप में महेंद्र प्रसाद, विकास कुमार, अशफाक, अली मोहम्मद, अनुज कुमार मुख्य रूप से शामिल थे। शिविर के समापन तक सैकड़ों आंख के मरीजों की जांच की गई, जिसमें जिन मरीजों में मोतियाबिंद के लक्षण पाये गये ,उन्हें हाजी ए आर मेमोरियल अस्पताल कथारा भेजा गया, जहां उनका मुफ्त ऑपरेशन और लेंस प्रत्यारोपण किया जायेगा। शिविर की सफलता में हरमेश मेहता, राजू वोरा, चेतन कोठारी, शंकर साव सहित कई लोगों ने भी अहम भूमिका निभाई।

कानून बेकार है, यदि उसका अनुपालन सुनिश्चित नहीं हो : न्यायमूर्ति राजेन्द्र

संविधान दिवस की पूर्व संध्या पर 'विधि-विमर्श' का लोकार्पण

विशेष संवाददाता

पटना : 'कानून बेकार है, यदि उसका अनुपालन सुनिश्चित न किया जाए। जीवन नेचुरल लौ से चलता है और शासन कानून से। किंतु यह सुनिश्चित नहीं किया जा रहा है। भारत की न्यायपालिका से न्याय की जो अपेक्षा की जाती है, उस पर वह खरी नहीं उतर रही। कार्यपालिका ऐसे-ऐसे निर्णय ले रही है, जिससे समाज मजबूत होने के स्थान पर टूटता जा रहा है।' यह बातें शनिवार को विधि-पत्रिका 'विधि-विमर्श' के तत्त्वावधान में संविधान दिवस की पूर्व संध्या पर बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन में आयोजित समारोह में पत्रिका के विशेषांक का लोकार्पण करते हुए पटना उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति राजेंद्र प्रसाद ने कही। उन्होंने कहा कि 'नेचुरल लौ के अनुसार चल कर ही हम मूल्यवान जीवन जी सकते हैं और एक अच्छे समाज का निर्माण कर सकते हैं।' वरिष्ठ अधिवक्ता यदुवंश गिरि ने कहा कि कानून संविधान से निकला है। संविधान के आलोक में समाज की आवश्यकता के अनुसार नए कानून बनते हैं। आवश्यकता के अनुसार संविधान में संशोधन भी होते हैं। विधि-विमर्श पत्रिका, जिसका आज तीसरा वार्षिकोत्सव भी मनाया जा रहा है, आम जन को विधि-ज्ञान से अवगत कराने का जनोपयोगी कार्य कर रही है, जो प्रशंसनीय है।

बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष डा. अनिल सुलभ ने कहा कि भारत की न्यायपालिका पर वाद/परिवाद और याचिकाओं का इतना बड़ा बोझ है कि नैसर्गिक न्याय असंभव हो रहा है। इनमे अधिकतर झूठे मामले तथा अधिकारियों द्वारा लिए गए गलत निर्णयों के विरुद्ध याचिकाएं होती हैं। यदि झूठे मामले दर्ज करने वाले व्यक्तियों को भी वही दंड दिया जाए तथा दोषी अधिकारियों के विरुद्ध दंडात्मक कार्रवाई हो तो न्यायिक व्यवस्था में एक बड़ा गुणात्मक परिवर्तन हो सकता है। बिहार पुलिस मेंस एशोसिएशन के अध्यक्ष मृत्युंजय कुमार सिंह ने कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि कानून बनाने और कानून का अनुपालन सुनिश्चित करने वाले ही कानून तोड़ते नजर आते हैं। इनमे पुलिस, राजनेता और अधिवक्ता भी सम्मिलित हैं। आज हर थाने में एक-एक अनुसंधानकर्ता के ऊपर सैकड़ों मामलों का बोझ है। ऐसे में समय पर और उचित अनुसंधान कैसे संभव हो सकता है?

पत्रिका के संपादक और अधिवक्ता रणविजय सिंह की अध्यक्षता में आयोजित इस समारोह में विशिष्ट अतिथि डा. अजय प्रकाश, डा. ओम प्रकाश जमुआर, अधिवक्ता राम संदेश राय, जगदीश्वर प्रसाद सिंह, अलका वर्मा, शिवानन्द गिरि आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर पूर्व सांसद और अधिवक्ता राजनीति प्रसाद, बद्री नारायण, मिथिलेश गुप्ता, विजय कुमार, गुंजन कुमार, सुशील कुमार आदि अधिवक्ताओं को 'विधि विमर्श सम्मान-2023' से विभूषित किया गया। मंच का संचालन कुलदीप नारायण दूबे ने तथा धन्यवाद-ज्ञापन शिवानन्द गिरि ने किया।

धार्मिक स्थलों व शिक्षण संस्थानों से दूर होनी चाहिए शराब दुकानें

हेल्पिंग कॉर्प्स फाउंडेशन के सदस्यों ने बढ़ाया कदम, मंत्री से की मांग

संवाददाता

बोकारो : गैर-सरकारी संस्था हेल्पिंग कॉर्प्स फाउंडेशन ने धार्मिक स्थलों और शिक्षण संस्थानों से शराब दुकानों की दूरी सुनिश्चित करने को लेकर अपने ठोस कदम उठाए हैं। फाउंडेशन के एक प्रतिनिधिमंडल ने झारखंड सरकार की मद्य-निषेध एवं उत्पाद विभाग मंत्री बेबी देवी से उनके आवास अलारगो (बोकारो) में मुलाकात की। इस बाबत हेल्पिंग कॉर्प्स फाउंडेशन के राज्य अध्यक्ष विशाल गंभीर ने बताया कि मंत्री महोदया को दो सूत्री मांग को लेकर ज्ञापन सौंपा गया है। पहली मांग राज्य में धार्मिक स्थल, स्कूल व कॉलेज के आसपास संचालित शराब दुकानों को बंद कर दूसरे स्थान पर चलाने तथा सरकारी शराब दुकानों पर एमआरपी से अधिक मूल्य पर खुलेआम शराब बिक्री पर रोक लगाने की मांग की गई है। प्रतिनिधिमंडल ने इसके लिए जांच टीम का गठन कर दोषियों पर करवाई किए जाने की भी मांग की।

इस संबंध में मंत्री बेबी देवी एवं उनके प्रतिनिधि अखिलेश महतो ने कहा कि मामले की जांच करवाई जाएगी तथा दोषी पाए जाने पर किसी को बक्शा नहीं जाएगा।

प्रतिनिधिमंडल में फाउंडेशन के राज्य अध्यक्ष विशाल गंभीर सहित राज्य उपाध्यक्ष मनोज चावला, राजेश राणा, धनबाद जिला सचिव गुरमीत सिंह, धनबाद मानव अधिकार सेल के जिला कॉर्डिनेटर विकास कुमार दसौंधी, पर्यावरण सेल के जिला कॉर्डिनेटर शुभेंदु भौमिक, गिरिडीह के मानव अधिकार के जिला संयोजक सुनील महतो, बोकारो बाल संरक्षण के जिला समन्वयक अफजल खान, धनबाद बाल संरक्षण सेल की जिला संयोजक भावना आदि शामिल रहे।

थैलेसीमिया पीड़ित बच्चों के लिए रक्तदान करनेवाले समाजसेवी सम्मानित

पुपरी : अनुमंडल प्रशासन, पुपरी के तत्वावधान में इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी, उप जिला शाखा- पुपरी की ओर से एचडीएफसी बैंक, मुजफ्फरपुर के सहयोग से स्थानीय डाकबंगला परिसर में जिले के थैलेसीमिया पीड़ित बच्चों के सहायतार्थ स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। सभी रक्तदाताओं को सम्मानित भी किया गया। इनमें राघवेंद्र प्रसाद, कुन्दन कुमार, राकेश रंजन, मो. मतलुबुर रहमान, आशीष कुमार, पंकज कुमार ओमी, गुलजार मंसूरी, सूरज कुमार, शम्भू मंडल, मो. तमन्ना मंसूरी, तारिक इकबाल, सैयद नौशाद अहमद, हृषिकेश कुमार चौधरी, सचिन गौरव, पंकज कुमार, चंद्रमणि कुमार, रंजीत कुमार, प्रीतम कुमार, जीवनजी, डॉ संजीव कुमार झा, डॉ अजय कुमार मिश्र, गौरव कुणाल, आयुष कुमार, विशाल पासवान, प्रभात कुमार चंदन, चंदन कुमार, साकेत कुमार कर्ण, प्रिंस कुमार, अमित कुमार, मो. सुल्तान हुसैन, मो. सहाब अंसारी, कृष्णा कुमार, दीपक कुमार, मो. अरशद अली, रिशु राज, रवि शंकर पंडित, रौशन पासवान, संजीत पाठक, अनमोल कुमार, मो. शाहिद एवं मो. सौबान समेत कुल 41 रक्तदानी शामिल थे। उनका उत्साहवर्धन करते हुए एसडीएम सह- रेडक्रॉस, पुपरी शाखा के अध्यक्ष इश्तेयाक अली अंसारी एवं थानाध्यक्ष रामविनय पासवान ने उन्हें तिरंगा पट्टा, प्रतीक चिन्ह एवं सम्मान पत्र प्रदान कर सम्मानित व प्रोत्साहित किया। एसडीएम ने मौके पर कहा कि रक्तदान से बड़ा कोई दान नही होता है यह अत्यंत ही पुण्य का कार्य है। रक्त की चंद बूंदों से किसी घर का चिराग बुझने से बच सकता है। शिविर की सफलता में सदर अस्पताल, सीतामढ़ी ब्लड बैंक के एलटी मो. शमीम अख्तर, सैयद अबुल आमिर एवं डीईओ सुजीत कुमार ने सहयोग किया। मौके पर उपाधीक्षक, अनुमंडलीय अस्पताल, पुपरी डॉ. कफील अख्तर अंसारी, पूर्व मुखिया मो. इसरारुल हक पप्पू, स्वास्थ्य प्रबंधक साक्षी, रेडक्रॉस सचिव अतुल कुमार, एचडीएफसी बैंक प्रतिनिधि पंकज कुमार, मो. शाकीर हुसैन, देवेंद्र मिश्र, मो. आफताब, सागर कुमार, मो. शाकीर, सुधीर मल्लिक, विनोद कुमार, मनोरंजन प्रतिहस्त आदि भी मौजूद रहे।

मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह में कलाकारों ने किया मंत्रमुग्ध

मिथिला डायरी

मधुबनी : महाकवि विद्यापति की पुण्य स्मृति में मिथिला की कलात्मक व पारंपरिक संस्कृति को सशक्त करने के उद्देश्य से बेनीपट्टी में मिथिलांचल सर्वांगीण विकास संस्थान द्वारा 39वें तीनदिवसीय मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह सह मैथिल महासम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कलाकारों ने मिथिला की धरोहर व सभ्यता-संस्कृति पर आधारित अपनी विभिन्न कलात्मक प्रस्तुतियों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। इनमें जट-जटिन, सामा-चकेवा, हमरे डाला पनपथिया सं, झरनी आदि से संबंधित गीत-संगीत व नृत्य की प्रस्तुतियां विशेष रहीं। कलाकारों में प्रीति प्रिया, नन्दिता कुमारी, रानी कुमारी, अंजली मिश्रा, रामचंद्र पासवान, लालदेव साह, रोहित कुमार, मिथिलेश कुमार, अर्जुन कुमार आदि शामिल थे। समारोह के मुख्य अतिथि पूर्व मंत्री सह विधायक विनोद नारायण झा ने कहा कि कवि कोकिल विद्यापति मैथिली साहित्य के कालजयी रचनाकार थे। मिथिला की परंपरागत भाषा से अपनी रचना को अलंकृत करने की परांगता के शिखर को छूने की कला से वे परिपूर्ण थे। समारोह की अध्यक्षता संस्था के संस्थापक अध्यक्ष अमरनाथ झा भोलन ने की तथा संचालन शिक्षक अखिलेश झा ने किया। जबकि, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का निर्देशन आलोक झा ने किया।

अखण्ड मन की शक्ति अनंत

गुरुदेव श्री नंदकिशोर श्रीमाली

मन का स्वभाव भटकना है। एक काम करने जाइए तो मन दूसरी दिशा में भाग जाता है। ऐसा क्यों होता है? मन की भटकन ही मन का स्वभाव है। मर्कट या बंदर एक स्थान पर शांत नहीं रह सकता है। उसका स्वभाव है इधर से उधर छलांग मारना। बिल्कुल इसी प्रकार मन का स्वभाव है, इधर से उधर भटकना, सो यदि आपका मन भी भटकता है तो इसमें कोई नई बात नहीं है।

मन को भटकने से रोकने के लिए आपको अनेक सुझाव मिले होंगे, जैसे कि ध्यान लगाना, योग अभ्यास करना। विडंबना यह है कि जिसका मन कहीं भटक रहा हो, उसके लिए यह सलाह उतनी ही कठिन है, जैसे किसी प्यासे के सामने खारे पानी की गिलास रख कर कह दें कि प्यास बुझा लो, पानी तो है न?

जिसका मन भटकने में माहिर हो गया है, उसे ध्यान की सीख देना उसी प्रकार है, जैसे बंदर को शांत बैठने का निर्देश देना है। शांत बैठना बंदर का स्वभाव नहीं है, वैसे ही मन का यह स्वभाव नहीं कि वह शांत रहे, एक स्थान पर टिक कर रहे।

हां, मन को कुछ देर के लिए स्थिर किया जा सकता है। उसके पसंदीदा काम में उलझाकर उसे बहलाया जा सकता है। इसलिए हम सब ने अनुभव किया है कि सिनेमा देखते हुए या फिर घूमते-फिरते हुए मन नहीं भागता है।

मन को कुछ देर के लिए स्थिर करने का प्रयास कुछ इस प्रकार का है, जैसे किसी नटखट बच्चे को उसकी पसंद का खिलौना देकर थोड़ी देर के लिए बहला दिया जाए, लेकिन जब उसी बच्चे को माता खाना खिलाने के लिए बैठी है तब बच्चा शांत नहीं बैठता है, बल्कि इधर से उधर भागता रहता है।

बिल्कुल इसी प्रकार वह मन जो मनोरंजन के समय बिल्कुल भी उदासीन नहीं होता है, अध्ययन करते समय या किसी गंभीर काम को करते समय थोड़ी-थोड़ी देर पर भटकता है। मन के इस अनवरत चल रहे भटकाव को रोकने के लिए यह जानना आवश्यक है कि मन आखिर भटकता क्यों है? जब तक समस्या का कारण नहीं मालूम चले, उसका निराकरण करना कठिन होता है। इस हेतु मन की अस्थिरता का कारण समझना होगा।

ईश्वर ने मनुष्य को बिल्कुल अपने जैसा बनाया, पर फिर ईश्वर को ऐसा प्रतीत हुआ कि कहीं ऐसा नहीं हो कि मनुष्य अपनी शक्तियों का दुरुपयोग करने लगे। उन्होंने उसकी शक्तियों की कुंजी मन में छुपाकर उसके द्वार को बंद कर अंधेरे में ढ़क दिया।

जन्म लेते ही मनुष्य जो रोता है, वह रुदन उसके मन के अंधेरे का रुदन होता है। रुद्र सिर्फ शिव का एक रूप नहीं है, बल्कि हर मनुष्य है, जो रोते हुए संसार में आता है।

मन के उजाले की लौ हैं सद्गुरु

अपने उद्देश्यों को बनाते हुए मनुष्य अनभिज्ञ है कि उसके जीवन का प्रमुख उद्देश्य क्रोध और अधीरता पर काबू करके अपने मन के अंधेरे में उजाले की लौ को जलाना है। मानव जीवन में निरंतर उन्नत बनने की कुंजी वहीं छुपी है। मन का अंधेरा तभी समाप्त हो सकता है, जब सद्गुरु आकर शक्तिपात का उजाला कर दें। समस्या है कि प्रत्येक व्यक्ति को गुरु शक्ति पर इतना अधिक विश्वास नहीं है। मीडिया में कुछ कोई एक अप्रीतिकर प्रसंग आ जाता है कि उन्हें लगता है कि गुरु शक्ति छलावा है।

अब यदि गुरु शक्ति को कटघरे में खड़ा कर दिया तो मन के अंधेरे को मिटाने के लिए मन की शक्ति को ही एकाग्र करना होगा, दूसरा कोई और मार्ग नहीं है। जैसे सूर्य के प्रकाश को यदि एक जगह पूंजीभूत किया जाए तो आग लग सकती है, उसी प्रकार मन की शक्ति को एकाग्र किया जाए तो मन के भीतर उजाला लाया जा सकता है। लेकिन, वहां भी बाधा है। मन है कि वह एकाग्र ही नहीं होता, इधर से उधर भागता रहता है। उसे बांधा कैसे जाए?

मन का हर ओर भागना अश्वमेध यज्ञ के उस घोड़े की तरह है, जो अपने मन की मौज में जहां चाहे, वहां चला जाता है। लेकिन यहां एक भेद है। अपनी मौज में बह रहे मन के पीछे सिपाहियों की टुकड़ी नहीं होती है, जो उसके मार्ग में आई बाधाओं को भगाए और जिस दिशा में वह जा रहा है, वहां वह निर्बाध गति से बढ़े।

बंधन और अंकुश मन पर पीड़ा

भटकते मन पर अंकुश साधना शक्तियों का अपव्यय है। मन हमेशा अंकुश पर हावी रहता है, इसी कारण से संकल्प टूट जाते हैं, हम श्रेष्ठ पथ पर आगे नहीं बढ़ पाते हैं। फिर उपाय क्या है? मन को भटकने के लिए उन्मुक्त कर दिया जाए? नहीं!

देखा जाए तो हमारा मन सीखचों में बंधा हुआ है। यह बंधन घर-परिवार, समाज, हमने स्वयं ही लादे हैं और इनमें मन बंधा हुआ है, इस बंधे हुए मन से काम करने के लिए कहते हैं तो वह भटकने के अतिरिक्त क्या करेगा? इतना तो हम सब ने मान लिया है कि मन की शक्ति अथाह है। मन चाहे तो कुछ भी असंभव नहीं है। जिस देवता ने हमें बनाया है, उस देवता ने हम में प्राण फूंकते ही हमारी शक्तियों की कुंजी हमारे मन में डाल दी और मन के दरवाजे को बंद कर दिया। शायद इसलिए मनुष्य के जीवन में जब समस्या आती है, वह मंदिर के दरवाजे पर नमन करता है।

मंदिर मन का द्वार है। मंदिर में नमन करते हुए वह सोचता है कि उसके मन की रोशनी की किरण आ जाएगी। शायद उसके मन का दरवाजा थोड़ा खुलेगा। मन को भटकने से रोकने के लिए चार बातों को जीवन में अपना लें-

1. मन की सुनें। मन गलत नहीं कहता है। उसकी अनदेखी करना गलत है। मौलिक तौर पर यदि विद्यार्थी उस विषय को पढ़े, जिसमें उसकी रुचि है, तब मन के भटकने के दर में कमी स्वाभाविक है।

2. इस बात को जानना आवश्यक है कि मन बहुत प्रखर है। हर छोटी-मोटी चीज को करने में मन लगाने की आवश्यकता भी नहीं है। जैसे तलवार से किचन में आलू काटा जाए तो तलवार और आलू दोनों का नुकसान है, वैसे ही रूटीन के काम सतही तौर पर किए जा सकते हैं। मन की शक्ति का उछाल दिन भर में थोड़ी देर के लिए अनुभव किया जाता है। इस समय को पहचान कर पूरी एकाग्रता से काम करना मन के अनुसार चलना है। पश्चिम में इसे डीप वर्क कहते हैं तथा पूर्व में इस सिद्धांत को ब्रह्ममुहूर्त में अध्ययन करना कहा गया है।

3. मन को प्रखर एकाग्रता करता है। थोड़ी देर के लिए सही, सभी शक्तियों को जोड़कर एक भाव करने से काम सिद्ध होते हैं।

4. मन के अंधेरे को आशा दूर करती है। मन में उजाला होगा तो उसके दरवाजे को खोल अंदर जाकर शक्ति की चाबी लेना सहज रहेगा।

बार-बार मन क्यों भटकता है

मन भटकने का अर्थ है कि जो आप कर रहे हैं, उसमें या तो आपकी रुचि नहीं है या किसी फलाकांक्षा पर आपका मन अटका हुआ है। दोनों ही स्थितियों में आपका मन भटकता रहता है। पहली स्थिति के लिए ऊपर बताये उपाय कारगर हैं, लेकिन फलाकांक्षा पर अटका हुआ मन क्षुब्ध, बेचैन, उत्सुक, व्यग्र, क्रोधित सब रहेगा, बारी-बारी से या फिर एक साथ।

फलाकांक्षा पर अटका हुआ मन दरअसल अपने आप को स्वयं बंधनों में बांध लेता है। इस मन को स्वतंत्र सिर्फ शक्ति का अभय वरदान कर सकता है। शक्ति के हाथों में भिन्न-भिन्न प्रकार की अभय मुद्राओं को दर्शाया गया है। फल के लिए मन की व्यग्रता वास्तव में मन का दुस्साहस है। काल शिव हैं, इस संसार में ईश्वर शाश्वत सत्य है तथा शक्ति उस कालखंड में निरंतर हो रहा बदलाव है। यह दो मुख्य धुरियां हैं और मनुष्य का प्रयत्न एवं प्रयत्न से उत्पन्न फल उस शक्ति जनित बदलाव का एक सूक्ष्मतम अंश है।

अब, बदलाव की दिशा तथा फल की प्राप्ति एक ओर रहेंगे तो फल मिलेगा, अन्यथा नहीं। जैसे तूफान आने पर छोटे पौधे बच जाते हैं, विशाल पेड़ नष्ट हो जाते हैं, क्योंकि पौधे तूफान की दिशा में मुड़ जाते हैं। वैसे ही प्रयास जनित फल यदि शक्ति के द्वारा लाये जाने वाले बदलाव का हिस्सा है तो फल अवश्य मिलेगा।

मन को फल प्राप्ति पर टांग देना अपने मन के साथ अन्याय है। विशेष बात यह है कि अखण्ड मन की शक्ति अनंत है, परंतु मन जितना अधिक व्यग्र, उत्सुक, बेचैन होगा, खासकर यह सोचकर कि कल क्या होगा, उसकी शक्ति बंट रही है। उन बंटी हुई शक्तियों से मन किसी भी काम में लगेगा नहीं, बल्कि उससे भटकेगा।

(साभार : निखिल मंत्र विज्ञान)

सर्दियों में सेहत के लिए फायदेमंद हैं गुड़-मेथी के लड्डू

सर्दियों में गुड़ मेथी के लड्डू खाने का मजा ही कुछ और है। गुड़ मेथी के लड्डू ना सिर्फ स्वाद में गजब होते हैं, बल्कि इससे रोग प्रतिरोधक क्षमता (इम्यूनिटी) बढ़? के साथ सर्दी भी कम लगती है। जानते हैं, कैसे बनाएं गुड़ मेथी के लड्डू -

लड्डू बनाने के लिए सामग्री100 ग्राम मेथी दाना, 1/2 लीटर दूध, 300 ग्राम गेहूं का आटा, 250 ग्राम घी, 100 ग्राम गोंद, 30-35 बादाम, 300 ग्राम गुड़ या चीनी, 8-10 काली मिर्च, 2 छोटी चम्मच जीरा पाउडर, 2 चम्मच सोंठ पाउडर, 10 छोटी इलायची, 4 टुकड़े दालचीनी, 2 जायफल।

लड्डू बनाने की विधि

सबसे पहले मेथी दाना को साफ कर लें। अब मेथी को मिक्सर से थोड़ी दरदरी पीस लें। एक पैन में दूध उबालने के लिए रख दें। अब पिसी हुई मेथी को 8-10 घंटे के लिए दूध में भिगो दें। बादाम को काट लें और काली मिर्च, दालचीनी, इलायची और जायफल को कूट लें। अब एक कड़ाही में आधा कप घी डालकर, भीगी हुई मेथी को भूनें। मध्यम आंच पर इसे हल्का ब्राउन होने तक भूनना है। अब बची हुए घी में गोंद को तल लें और किसी प्लेट में निकाल लें। इसी कड़ाही में बाकी घी डालकर आटे को हल्का ब्राउन होने तक भून लें। इसके बाद कड़ाही में 1 चम्मच घीडालकर, गुड़ को पिघला लें और चाशनी बना लें। गुड़ की चाशनी में, जीरा पाउडर, सोंठ पाउडर, कटे हुए बादाम, काली मिर्च, दालचीनी, जायफल और इलायची डालकर अच्छी तरह मिला लें।

अब इसमें भुनी हुई मेथी, भुना आटा, भुना गोंद डालकर अच्छी तरह से मिक्स कर लें। इस मिश्रण से अपनी पसंद के आकार के लड्डू बनाकर रख लें। लड्डू को थोड़ी देर के लिए हवा में खुला रहने दें। बाद में किसी एयर टाइट डिब्बे में सभी लड्डू को भरकर रख लें। आप इन्हें दूध से रोज सुबह-शाम खाएं। आप चाहें तो लड्डू में गुड़ की जगह पर चीनी या बूरा का भी इस्तेमाल कर सकते हैं। अपने पसंद के हिसाब से लड्डू में कोई मेवा कम या ज्यादा भी कर सकते हैं। मेथी के लड्डू खाने से आपको जोड़ों के दर्द, कमर दर्द और सर्दी में आराम मिलेगा।

- प्रस्तुति : शशि

राजा वैशालिक के नाम पर पड़ा वैशाली का नाम

रामबाबू नीरव
वरिष्ठ साहित्यकार
पुपरी, सीतामढ़ी (बिहार)।

अतीत की परछाइयाँ...
वैशाली राज्य का इतिहास

वैशाली जन का प्रतिपालक, विश्व का आदि विधाता,
जिसे ढूंढ़ता विश्व आज, उस प्रजातंत्र की माता।
रूको एक क्षण पथिक,
इस मिट्टी पे शीश नवाओ,
राज सिद्धियों की समाधि पर,
फूल चढ़ाते जाओ। (राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर)

वैशाली उत्तर बिहार का एक गौरवशाली राज्य रहा है। अनंत काल तक मिथिला राज्य का भी यह हिस्सा था. मिथिला के साथ साथ यदि वैशाली के इतिहास का अध्ययन न किया जाए तो उत्तर बिहार का इतिहास अधूरा रह जाएगा। वैशाली की धरती सनातन धर्म (हिन्दू धर्म) के साथ साथ जैन धर्म तथा बौध धर्म की भी पावन भूमि रही है, तो आईए जानते हैं वैशाली के अतीत को- वैशाली वर्तमान में बिहार राज्य का एक विकसित जिला है. इस जिला की ख्याति सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि समस्त विश्व में है. पूर्व में यह मुजफ्फरपुर जिला का अनुमंडल हुआ करता था। सन् 1972 के परिसीमन में सीतामढ़ी के साथ इस अनुमंडल को भी जिला का दर्जा दिया गया। वर्तमान में इस जिला का मुख्यालय हाजीपुर में है। प्राचीन वैशाली राज्य मगध साम्राज्य से उत्तर गंगा घाटी के विस्तृत क्षेत्र में अवस्थित था। वैशाली राज्य के उत्तर नेपाल की तराई तक मिथिला राज्य थे। (मिथिला राज्य के बारे में हम पिछले आख्यानों में पढ़ चुके हैं) वैशाली राज्य में मुजफ्फरपुर, हाजीपुर, शिवहर, चम्पारण तथा सीतामढ़ी के दक्षिणी भाग का भू क्षेत्र सम्मलित था। इस राज्य का प्राचीन इतिहास अत्यंत ही गौरवमयी और वैभवशाली रहा है। यहां ज्ञान, धर्म, अध्यात्म, सभ्यता तथा दर्शन का ऐसा आलोक प्रभाषित हुआ, जिसकी रोशनी से सिर्फ भारत ही नहीं बल्कि समस्त विश्व जगमगा उठा। इसके साथ ही भारत को विश्व गुरु बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वैशाली का अस्तित्व तथा गौरवशाली इतिहास सभ्यता के विकास यानि 7500 ईसा पूर्व (हड़प्पा और सिंधुघाटी सभ्यता) से आरंभ होता है। वैशाली के निकट स्थित चेचर (श्वेतपुर) ग्राम में 1935 में हुए उत्खनन में अनेकों प्राचीन मूर्तियां तथा दैनिक उपयोग में आने वाली सामग्रियां प्राप्त हुई है, जिन्हें हड़प्पा काल से जोड़ कर देखा जा रहा है।

वैदिक काल से ही है अस्तित्व

विभिन्न पुराणों के अनुसार वैशाली वैदिक काल से ही अस्तित्व में आ चुका था यानि भारत में इसी काल में आर्यों का आगमन होने लगा था। भारत के उत्तरी भाग के साथ साथ वैशाली तथा मिथिला में भी आर्यों ने साम्राज्य स्थापित किया। आर्यों की दूसरी शाखा (इक्ष्वाकु के पौत्र मिथिल) ने मिथिला राज्य की स्थापना की। बिहार राज्य तथा वैशाली एवं मिथिला का वर्णन अथर्व वेद (दसवीं से लेकर आठवीं ईसा पूर्व) में भी मिलता है। इन प्राचीन ग्रंथों में बिहार के लिए "व्रात्य" शब्द का उल्लेख है। इससे स्पष्ट होता है कि अथर्ववेद की रचना से पूर्व ही आर्यों ने मिथिला तथा वैशाली में अपना आधिपत्य स्थापित किया होगा। 800 ईसा पूर्व रचित शतपथ ब्राह्मण में गंगा की घाटी के क्षेत्रों में जंगलों को जलाकर समतल भूमि तैयार करके बस्ती बसाए जाने की जानकारी मिलती है, वहीं ऋग्वेद में बिहार के सम्पूर्ण भू-भाग (जिसमें वैशाली भी शामिल है) को कीकट कहा गया है। कीकट क्षेत्र के अमित्र शासक प्रेमगन्द की चर्चा की गई है, जबकि मना गया है कि आर्यों की सांस्कृतिक वर्चस्व का आरंभ ब्राह्मण ग्रंथों की रचना के समय हुआ। बिहार के प्रमुख प्राचीन राज्यों मिथिला, वज्जिका (वैशाली), अंग तथा मगध के साथ साथ अन्य छोटे छोटे राज्यों को मिला कर जो संयुक्त प्रान्त बना उसी का नाम बिहार है। वैशाली में ही विश्व के प्रथम गणतंत्र (प्रजातंत्र) की स्थापना हुई थी, जहां वैशाली जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी की जन्मस्थली (कुंडुपुर या कुंडलपुर) है, वहीं बौद्ध धर्म के प्रवर्तक भगवान बुद्ध की कर्मस्थली रही है। भगवान बुद्ध यहां कई कई माह तक विहार किया करते थे तथा अपने अनुयायियों को उपदेश दिया करते थे। वैशाली गणराज्य की विशेषताओं तथा भगवान महावीर एवं भगवान बुद्ध के धर्मों का विस्तृत उल्लेख चीनी यात्री ह्वेनसांग (युआन च्वांग) एवं फाह्यान ने अपने अपने यात्रा वृतांतों में किया है। इन दोनों चीनी यात्रियों ने लगभग 640 ई. सन् में भारत की यात्रा की थी। उस समय भारत के राजा हर्षवर्धन थे।

35 राजाओं का रहा है शासन

वाल्मीकि कृत रामायण, वेदव्यास कृत महाभारत तथा महाविष्णु पुराण में इस क्षेत्र पर राज करने वाले लगभग 35 राजाओं का वर्णन मिलता है। इन ग्रंथों के अनुसार वैशाली राज्य के प्रथम राजा नमनेदिष्ट थे, जिनका दूसरे नाम नभग था। वैशाली के अंतिम राजा सुमति थे। इनका दूसरा नाम प्रमाति था। संभवतः राजा प्रमाति द्वापरयुग (महाभारत काल) के अंत तथा कलिकाल के आरंभ में हुए होंगे, यानि 700 अथवा 600 ईसा पूर्व में। रामायण और महाभारत के अनुसार वैशाली नगर का निर्माण महाराज इक्ष्वाकु के पुत्र राजा विशाल, जिनका दूसरा नाम वैशालिक था, ने करवाया। (राजा इक्ष्वाकु के 100 पुत्र थे। वे सभी पराक्रमी और महत्वकांक्षी थे। सम्पूर्ण आर्यावर्त में उनलोगों ने ही अपना साम्राज्य स्थापित किया। एक तरह से देखा जाए तो भारतवर्ष के आदि पुरुष इक्ष्वाकु ही हैं) अपने उद्भव काल में यह नगर काफी सुन्दर तथा वैभवशाली था। राजा विशाल (वैशालिक) के नाम पर ही इस नगर का नाम वैशाली पड़ा। राजा विशाल ने यहां एक भव्य किला (दुर्ग) का निर्माण करवाया था। 1937 में पुरातत्व विभाग द्वारा यहां की गई खुदाई में उस किला के अवशेष भी खण्डहर के रूप में प्राप्त हुए हैं, जिससे ज्ञात होता है कि वैशाली का अतीत काफी गौरवशाली रहा होगा।

हिन्दू धर्म में इन कारणों से है कार्तिक पूर्णिमा का विशेष महत्व

- डॉ. बी.के. मल्लिक

पद्म, स्कंद, ब्रह्म पुराणों में कार्तिक पूर्णिमा को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। मान्यता है कि कार्तिक पूर्णिमा के दिन श्रीहरि विष्णु मत्स्यावतार में जल में निवास करते हैं. ऐसे में जो लोग इस दिन गंगा स्नान करते हैं उन्हें अमृत के समान गुण मिलते हैं। इस दिन स्नान, सत्यव्रत, विष्णु और मां लक्ष्मी की पूजा और दान का खास महत्व है। वैसे तो कार्तिक पूर्णिमा पर देव दिवाली मनाते हैं। हिंदू धर्म में कार्तिक पूर्णिमा का विशेष महत्व है। इस दिन देव दीपावली भी मनाई जाती है। मान्यता है कि इस दिन शिव जी ने त्रिपुरासुर राक्षस का वध किया था, इसलिए इस दिन को त्रिपुरी पूर्णिमा के नाम से भी जानते हैं। कार्तिक पूर्णिमा के दिन स्नान, दान-पुण्य और दीपदान करने का बहुत महत्व है। इस दिन भगवान विष्णु एवं माता लक्ष्मी के साथ चंद्रदेव की पूजा करने से भक्तों की आर्थिक, मानसिक और शारीरिक समस्याएं दूर होती हैं। इस दिन गंगा या अन्य किसी पवित्र नदी अथवा जलकुंड में स्नान करना बहुत फलदाई है। प्रत्येक वर्ष 12 पूर्णिमाएं होती हैं। जब अधिकमास व मलमास आता है तब इनकी संख्या बढ़कर 13 हो जाती है। कार्तिक पूर्णिमा को त्रिपुरी पूर्णिमा व गङ्गा स्नान के नाम से भी जाना जाता है।

इस पूर्णिमा को त्रिपुरी पूर्णिमा की संज्ञा इसलिए दी गई है, क्योंकि आज के दिन ही भगवान भोलेनाथ ने त्रिपुरासुर नामक महाभयानक असुर का अन्त किया था और वे त्रिपुरारी के रूप में पूजित हुए थे। ऐसी मान्यता है कि इस दिन कृतिका में शिव शंकर के दर्शन करने से सात जन्म तक व्यक्ति ज्ञानी और धनवान होता है। इस दिन चन्द्र जब आकाश में उदित हो रहा हो उस समय शिवा, संभूति, संतति, प्रीति, अनुसूया और क्षमा इन छः कृतिकाओं का पूजन करने से शिव जी की प्रसन्नता प्राप्त होती है। इस दिन गङ्गा नदी में स्नान करने से भी पूरे वर्ष स्नान करने का फल मिलता है। कार्तिक पूर्णिमा के दिन तमिलनाडु मै अरुणाचलम पर्वत की 13 किमी की परिक्रमा होती है। सब पूर्णिमा मै से ये सबसे बड़ी परिक्रमा कहलाती है । लाखों लोग यहाँ आकर परिक्रमा करके पुण्य कमाते है । अरुणाचलम पर्वत पर कार्तिक स्वामी का आश्रम है वहां उन्होंने स्कन्दपुराण का लिखान किया था।

हिंदू धर्म में कार्तिक मास को बहुत पवित्र माना जाता है। इस माह में भगवान विष्णु चार माह की योग निद्रा के बाद जागते हैं। इसके अलावा इस माह में तुलसी जी का भी विवाह किया जाता है। वहीं कार्तिक पूर्णिमा पर गंगा नदी में स्नान करने से अक्षय पुण्य प्राप्त होता है। साथ ही इस दिन चंद्रमा और माता लक्ष्मी की पूजा करने से धन में वृद्धि होती है।

पुराणों के अनुसार, इसी दिन भगवान विष्णु ने प्रलय काल में वेदों की रक्षा के लिए तथा सृष्टि को बचाने के लिए मत्स्य अवतार धारण किया था। महाभारत के अनुसार, महाभारत काल में हुए 18 दिनों के विनाशकारी युद्ध में योद्धाओं और सगे संबंधियों को देखकर जब युधिष्ठिर कुछ विचलित हुए तो भगवान श्री कृष्ण पांडवों के साथ गढ़ खादर के विशाल रेतीले मैदान पर आए।

वहीं, वैष्णव मत के अनुसार, कार्तिक पूर्णिमा को गोलोक के रासमण्डल में श्री कृष्ण ने श्री राधा का पूजन किया था। हमारे तथा अन्य सभी ब्रह्मांडों से परे जो सर्वोच्च गोलोक है वहां इस दिन राधा उत्सव मनाया जाता है तथा रासमण्डल का आयोजन होता है। कार्तिक पूर्णिमा को श्री हरि के बैकुण्ठ धाम में देवी तुलसी का मंगलमय पराकाट्य हुआ था। कार्तिक पूर्णिमा को ही देवी तुलसी ने पृथ्वी पर जन्म ग्रहण किया था। कार्तिक पूर्णिमा को राधिका जी की शुभ प्रतिमा का दर्शन और वन्दन करके मनुष्य जन्म के बंधन से मुक्त हो जाता है।

पेज- 1 का शेष

बांग्लादेशी घुसपैठियों...

कि झारखंड के सीमावर्ती इलाके से बांग्लादेशी घुसपैठिए कैसे प्रवेश कर रहे और उन्हें रोकने के लिए क्या उपाय किये जा रहे हैं? लेकिन, इस मामले में अभी तक कोई ठोस जवाब नहीं मिलने के बाद ही कोर्ट ने गृह मंत्रालय से पुनः जवाब तलब किया है।

संथाल परगना में प्रभावित हो रही आबादी

मालूम हो कि वर्ष 2018 में झारखंड में रघुवर दास के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार ने एक रिपोर्ट तैयार कराई थी और एनआरसी (नेशनल रजिस्टर ऑफ सिटीजनशिप) लागू कराने का प्रस्ताव केंद्र को भेजा था। रिपोर्ट में बताया गया था कि पाकुड़ और साहिबगंज जिलों में बांग्लादेशी घुसपैठियों की आबादी तेजी से बढ़ी है। ऐसा इसलिए हो रहा है, क्योकि झारखंड से बांग्लादेश की सीमा लगभग 40-45 किलोमीटर की दूरी पर है। झारखंड में फरक्का, उढ़ावा, पीयारपुर, बेगमगंज, फूकदकीपुर, दियारा, चांदशहर और प्राणपुर आदि इलाकों से बांग्लादेशी घुसपैठियों की आवाजाही बेरोक-टोक हो रही है। वर्ष 2001 में पाकुड़ जिले की कुल आबादी 7,01,664 थी। इसमें मुस्लिम आबादी 2,32,373 थी। इसका सीधा अर्थ यह हुआ कि आदिवासी बहुल पाकुड़ जिले में लगभग 33 प्रतिशत आबादी अकेले मुसलमानों की है। वर्ष 2011 में पाकुड़ की कुल आबादी 9,00,422 हो गई। इसमें मुस्लिम आबादी 3,22,963 थी। यही हाल साहिबगंज का रहा। वर्ष 2001 में साहिबगंज की कुल जनसंख्या 9,27,770 थी। इसमें 2,70,423 मुस्लिम आबादी थी। जबकि, 2011 में जिले की कुल आबादी 11,50,567 हो गई। मुस्लिम आबादी भी 3,08,343 हो गई। आबादी बढ़ने का बड़ा कारण घुसपैठ के साथ-साथ आदिवासी महिलाओं से शादी कर घुसपैठियों का यहीं बस जाना बताया गया है। हाईकोर्ट भी इन तथ्यों से चिंतित है और केंद्रीय गृह मंत्रालय से बांग्लादेशी घुसपैठियों की जानकारी के बारे में पूछा गया है।

हाईकोर्ट के आदेश से...

माननीय उच्च न्यायालय के संज्ञान में यह मामला आया है तो निश्चित रूप से इस दिशा में ठोस कार्रवाई होगी।'

घुसपैठ से बढ़ रहीं राष्ट्रविरोधी गतिविधियां : उल्लेखनीय है कि राजमहल के भाजपा विधायक अनंत ओझा ने विधानसभा के बजट सत्र के दौरान कार्य स्थगन सूचना के जरिए संथाल परगना के जिलों में बांग्लादेशी घुसपैठ का मामला उठाया था। उन्होंने कहा था कि साहिबगंज जिलों पिछले कुछ वर्षों से बांग्लादेशी घुसपैठ से जनसंख्या संतुलन बिगड़ गया है। मीडिया से बातचीत करते हुए उन्होंने राज्य की हेमंत सोरेन सरकार पर तुष्टिकरण की राजनीति करने का आरोप लगाया था। उनका कहना था कि ऐसा वोटबैंक की राजनीति और अल्पसंख्यकवाद को पोषित करने के लिए किया जा रहा है, क्योंकि जिस प्रकार से पूरे प्रदेश के अन्दर बांग्लादेशी घुसपैठियों के द्वारा राष्ट्रविरोधी गतिविधियां बढ़ रही हैं, यह राज्य के लिए चिंताजनक है। पूरे राज्य के अन्दर अराजक वातावरण की पृष्ठभूमि तैयार हो रही है। इसलिए मैंने सदन के अन्दर यह मांग की है कि 1951 की जनगणना और 1952 की मतदाता सूची को आधार बनाकर बांग्लादेशी घुसपैठियों को चिन्हित करने के लिए एनआरसी की प्रक्रिया झारखंड में प्रारंभ की जाय।

रक्षा मामलों में हम आत्मनिर्भर : मोदी

अब अपने देश में ही बनेंगे रक्षा विमानों के इंजन, प्रधानमंत्री ने 'तेजस उड़ान' से बढ़ाया हौसला

ब्यूरो संवाददाता

नई दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शनिवार को फ्लाइंग कैप्टन के रूप में नजर आए। उन्होंने एचएएल निर्मित स्वदेशी लड़ाकू विमान तेजस से उड़ान भरी। इस क्रम में उनका आत्मविश्वास किसी भी पूर्ण सक्षम फ्लाइंग कैप्टन से कम नहीं दिखा। दरअसल, शनिवार सुबह पीएम मोदी बेंगलुरु स्थित हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड के कारखाने पहुंचे थे। यहां उन्होंने 'तेजस' में उड़ान भरने के साथ ही सोशल मीडिया पर अपने अनुभव साझा किए। प्रधानमंत्री कार्यालय द्वारा दी गई जानकारी अनुसार, प्रधानमंत्री मोदी ने आज तेजस विमान में उड़ान भरने का अनुभव लिया। पीएम मोदी मैन्यूफैक्चरिंग हब (विनिर्माण) का निरीक्षण करने के लिए बेंगलुरु पहुंचे थे।

इसी बीच उन्होंने तेजस विमान में उड़ान भरने का अनुभव लिया और अपने अनुभव को सोशल मीडिया पर साझा किया।

अपने अनुभव साझा करते हुए उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट करते हुए कहा कि आज तेजस में उड़ान भरते हुए गर्व के साथ कह सकता हूं कि हमारी मेहनत और लगन के कारण हम आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में विश्व में किसी से कम नहीं हैं। इसके साथ ही उन्होंने भारतीय वायुसेना, डीआरडीओ और एचएएल के साथ ही समस्त भारतवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित कीं। गौरतलब है कि प्रधानमंत्री मोदी प्रारंभ से ही रक्षा उत्पादों के स्वदेशी उत्पादन और निर्माण पर जोर देते रहे हैं।

83 एयरक्राफ्ट का दिया गया है आर्डर

अधिकारियों के मुताबिक, मोदी सरकार के दौरान 83 लाइट कॉम्बैट एयरक्राफ्ट एमरे 1ए तेजस जेट्स की डिलीवरी के लिए 36 हजार 468 करोड़ का ऑर्डर हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड को दिया गया। इनकी डिलीवरी फरवरी 2024 तक शुरू होगी। उन्होंने कहा कि एलसीए तेजस के अपडेटेड और ज्यादा घातक वर्जन एलसीए एमके2 के डेवलपमेंट के लिए 9 हजार करोड़ रुपए की मंजूरी दी गई है।

अमेरिका के सहयोग से होगा इंजन-निर्माण

हल्के लड़ाकू विमान एलसीए मार्क- 2 (तेजस एमके 2) और स्वदेशी एडवांस्ड मीडियम कॉम्बैट एयरक्राफ्ट की पहली दो स्क्वॉड्रन के इंजन अब देश में ही बनेंगे। भारत में रक्षा क्षेत्र को मजबूती देने के लिए यह फैसला काफी अहम माना जा रहा है। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) के प्रमुख डॉ. समीर वी कामत के अनुसार, अमेरिकी कंपनी जीई एयरोस्पेस और हिन्दुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) मिलकर ये इंजन बनाएंगी। अमेरिका से इसकी सभी मंजूरी मिल गई है।

जलमार्ग से आसान होगा अंतदेर्शीय व्यावसायिक परिवहन

आईडब्ल्यूएआई और अमेजन में समझौता आत्मनिर्भर भारत की ओर बड़ा कदम

ब्यूरो संवाददाता

नई दिल्ली : गंगा नदी (राष्ट्रीय जलमार्ग 1) का उपयोग करके अंतदेर्शीय जलमार्गों के माध्यम से कार्गो यातायात और ग्राहक लदान (शिपमेंट) व उत्पादों के परिवहन को बढ़ावा देने के लिए भारतीय अंतदेर्शीय जलमार्ग प्राधिकरण (आईडब्ल्यूएआई) और अमेजन सेलर सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड (अमेजन) के बीच एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए। इस अवसर पर केंद्रीय पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग (एमओपीएसडब्ल्यू) और आयुष मंत्री सबार्नंद सोनोवाल उपस्थित थे। इसके अलावा मंत्रालय के सचिव टी.के. रामाचंद्रन और आईडब्ल्यूएआई के अध्यक्ष संजय बंद्योपाध्याय सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद थे।

रेल व सड़क परिवहन की तुलना में 91.6 फीसदी तक कम ईंधन की खपत

पीआईबी सूत्रों के अनुसार आईडब्ल्यूएआई और अमेजन के बीच यह सहयोग हमारे अंतदेर्शीय जलमार्गों के माध्यम से ई-कॉमर्स कार्गो के परिवहन को आगे बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण प्रगति का प्रतीक है। यह साझेदारी लॉजिस्टिक्स को अनुकूलित करने, पर्यावरणीय फुटप्रिंट को कम करने और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए जल परिवहन की दक्षता व स्थिरता का उपयोग करना चाहती है। विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार जल परिवहन की तुलना में रेल और सड़क परिवहन क्रमशः 18.5 फीसदी और 91.6 फीसदी अधिक ईंधन की खपत करते हैं, जो इसे परिवहन का सबसे पर्यावरण अनुकूल साधन बनाता है।

जलमार्गों के विकास की कहानी में नया पहलू : इस अवसर पर श्री सोनोवाल ने कहा कि यह भारत के जलमार्गों की विकास कहानी में एक और महत्वपूर्ण पहलू है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के गतिशील नेतृत्व में जलमार्गों को परिवहन का एक व्यापक और लोकप्रिय रूप बनाने में सक्षम बनाने के लिए हमेशा विशेष ध्यान दिया गया है। मोदी जी की इस सोच को साकार करने की दिशा में यह सरकार अथक प्रयास कर रही है।

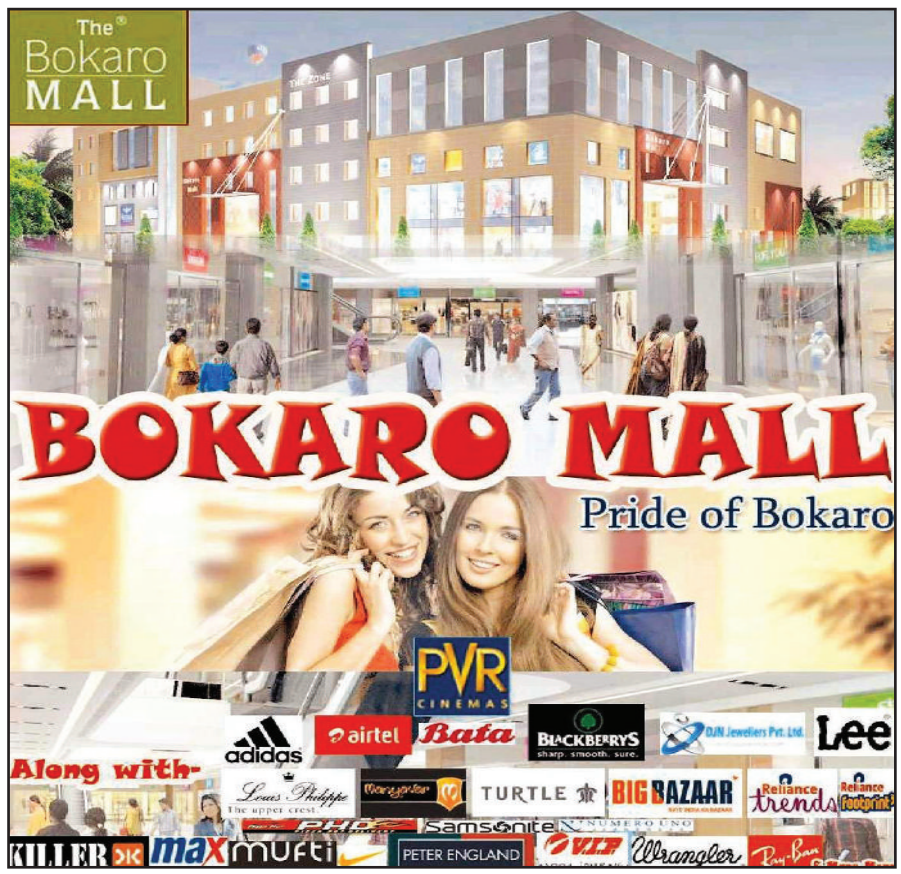

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी विजय कुमार झा द्वारा डीबी कॉर्प लिमिटेड, भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, गोविन्दपुर रोड, जीके आश्रम, धनबाद से मुद्रित एवं सेक्टर-3बी/94, बोकारो स्टील सिटी (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक : विजय कुमार झा***
प्रबंध संपादक : **कंचन झा**, दिल्ली ब्यूरो : **कैप्टन संजय,** फोन/फैक्स : (06542) 246899, E-mail : mithilavarnan@gmail.com, आरएनआई. पंजीयन संख्या : 48973/89 (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिये जिम्मेवार)